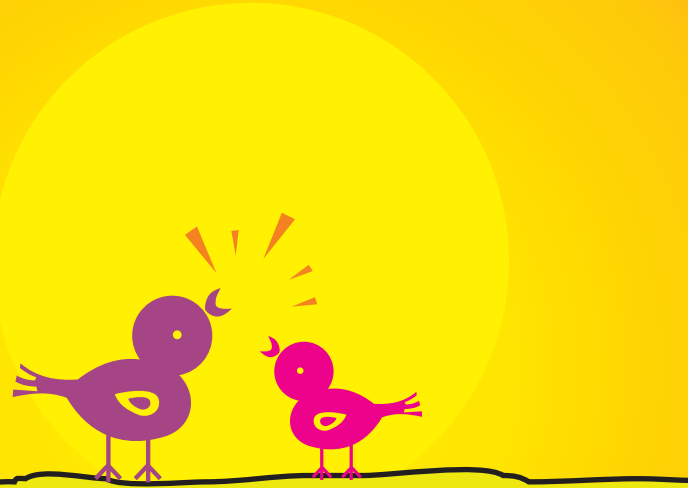


जिंदगी को बड़ी खूबसूरती देती...

‘छोटी-छोटी बातें’




आलोक सेठी



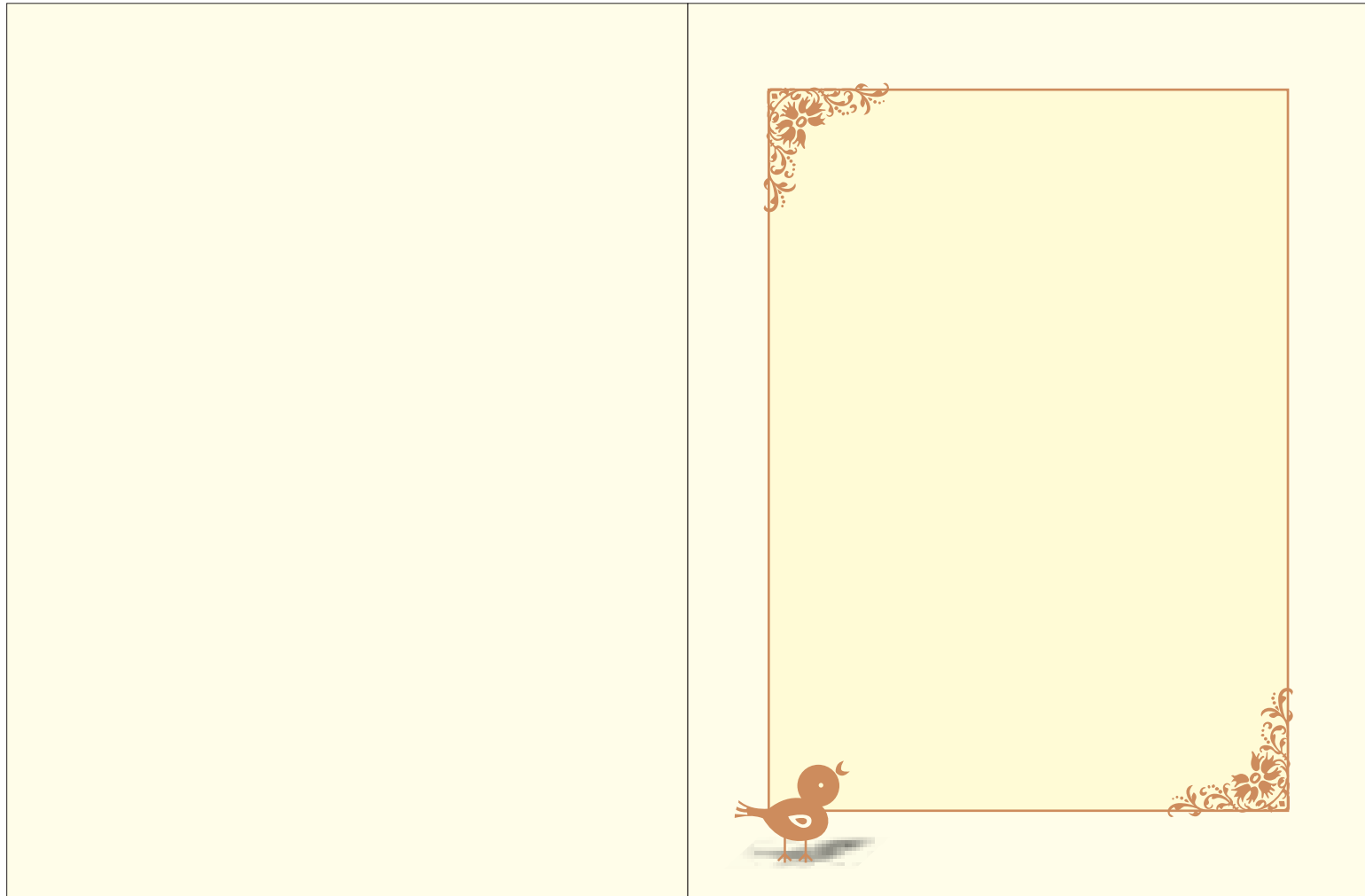
'छोटी-छोटी बातें'
'Choti-Choti Batten'

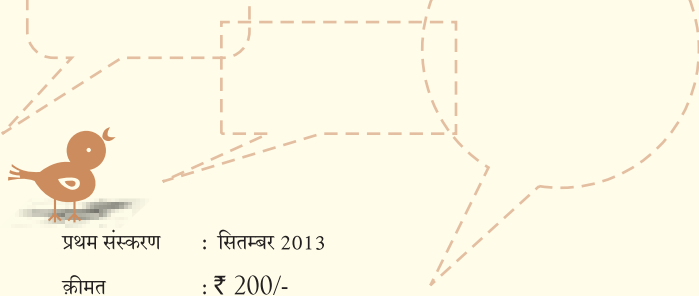
by
Alok Sethi



follow us on 
www.facebook.com/aloksethi

visit us -





प्रथम संस्करण : सितम्बर 2013
कीमत : ₹ 200/-
लेखक : आलोक सेठी
हिन्दुस्तान अभिकरण, पंधाना रोड, खण्डवा (म.प्र.)
फोन : 0733-2223003, 2223004
मोबाइल : 094248-50000
e-mail : hindustanabhikaran@yahoo.co.in
web : www.hindustanabhikaran.com
वितरक : अजय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
मोती मस्जिद के पीछे
सुलेमानिया स्कूल के पास, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2542556
मोबाइल : 093297-70850
e-mail : ajaypublishers@gmail.com
प्रकाशक एवं मुद्रक : क्वॉलिटी पब्लिशिंग कम्पनी
104, आराधना नगर, कोटरा, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2771977
ISBN No. : 13-978-81-89200-98-5
रूपांकन : 'एडराग' 097525-26881

©
इस पुस्तक के किसी भी अंश को बिना पूर्व अनुमति के उपयोग में लिया जा सकता है। स्रोत का उल्लेख कर सकें तो अच्छा लगेगा।



॥ समर्पित ॥

छोटी सी किताब
छोटों के नाम
परिवार की नई पीढ़ी
पूर्वा, पलाश, पल्लव, पर्व
जूही, पराग, अंकुर और आकांक्षा को...
जिनकी कुछ कर गुजरने की चाहत
से लबरेज चमचमाती आँखें
मेरी कलम में
जज़्बे की स्याही भरती हैं।



अपनी बात...



मेरी छोटी सी बात...

धरती पर जब आया तब परिवार में सबसे छोटा था। स्कूल कॉलेज में गया तो लिखने-पढ़ने में भी छोटा ही रहा। व्यापार-व्यवसाय में क्रम रखा तो वहाँ पर छोटा तो क्या बहुत ही छोटा था। इस दुनिया में एक बात बहुत अच्छी है; कि यहाँ छोटों को सुनने और सीखने का मौका सबसे ज्यादा मिलता है... जाहिर है मुझे भी मिला। बड़ों से भी, प्रतियोगियों से भी, सहयोगियों से भी और दोस्तों से भी। इन सबके मुझ पर अनगिनत एहसान हैं। ठोकर खाकर धीरे-धीरे मैं भी ठाकुर बनने लगा। पूरी तरह बन पाया या नहीं मुझे नहीं पता।

कारोबार और ज़िंदगी की इस यात्रा में मैंने हर ठोकर को पूरी तरह याद रखा और हर उस पत्थर का फ़ोटो खींच लिया जिसने मुझे लहलुहान करके ही सही मेरे अनुभव की दौलत में इज़ाफ़ा किया। कुछ ठोकरें ऐसी भी थीं जो बार-बार लगीं; ऐसी ठोकरों को मैं जीवन की नियति समझकर अपने पाँवों को कुछ और मज़बूत बनाने में जुट गया। बहरहाल जब इन ब्यौरों की डायरी और तस्वीरों का एलबम कुछ बड़ा होने लगा तो हमेशा की तरह मन में आया कि इसे कुछ अपनों से भी बाँटता चलूँ ताकि मेरे ज़ख्म देखकर वे अपने पैरों को ज़ख्मी होने से बचा सकें। यदि ज़ख्म हो भी जाएँ तो नाचीज़ का आजमाया हुआ अनुभवरूपी मरहम काम आ सके।

एक बात और... इस पुस्तक का लेखक कोई मैनेजमेंट गुरु या कॉर्पोरेट हस्ती नहीं है; दार्शनिक तो बिल्कुल भी नहीं। न ही वह खुद भी इन सारी बातों को अपने जीवन में पूरी तरह उतार पाया है। आप तो बस इसे नज़र भर पढ़ लीजियेगा जैसे आपका कोई प्रिय सखा बिना किसी संकोच और झिझक के अपनी ठोकरें और तजुबे आपसे साझा कर रहा है।

एक और गुज़ारिश... सबक बहुत छोटे हैं और यह किताब भी। इसे बेहद तसल्ली से, बहुत धीरे-धीरे, रस लेते हुए, मन में उतारकर पढ़ियेगा। एक बार संभव न हो तो टुकड़ों-टुकड़ों में ही सही। हो सके तो उस बच्चे की नज़र से पढ़ियेगा जो दीवाली पर घर में होने वाली साफ़-सफ़ाई के समय फेंके जाने वाले अटाले में से भी अपने काम की दो-चार चीज़ें ढूँढ़ लेता है। हो सकता है ऐसे दो-चार सबक आपके हाथ लग जाएँ और काम आ जाएँ और जिनसे मेरा इन का!ज़ों को काला करना सार्थक हो जाए। हर पन्ने पर दर्ज़ इन काँच के टुकड़ों को मेरे अज़ीज़ श्री संजय पटेल ने हीरों की तरह तराश दिया है और उनकी टीम एडराग ने उन्हें दमका दिया है; शुकराना उनका।

जैसा भी हूँ...आपका

❖ आलोक सेठी

सितम्बर 24, 2013

छोटी-छोटी पर बड़े काम की...



❖ अशोक चक्रधर
सुविख्यात कवि

अनुभव का आलोक....



व्यापार को व्यवहार में बदलना और व्यवहार को परिवार में बदलना कोई इनसे सीखे। पचास की पायदान पर पहुँचने के पहले ही अपनी उम्र से ज़्यादा विदेश यात्राएँ कर चुके इस शाख्स ने ऐसे अनुभव सहेजे हैं जो आपको यक़-ब-यक़ चौंका देते हैं। जीरो से हीरो बने

आलोक भाई ने छोटे शहर खण्डवा में रहकर जो कामयाबी हासिल की है वह भाग्य से कम और कर्म से ज़्यादा कमाई हुई नज़र आती है। खुशमिज़ाजी, नई बातों को सीखने की ललक, यात्राओं का जुनून और पढ़ने-पढ़ाने और सुनने का जज़्बा बचाते हुए एक कुशल व्यवसायी होना किसी करिश्मे से कम नहीं। वे एक बेहतरीन यारबाज़ हैं। आलोक भाई दोस्ती निभाने में हमेशा बाज़ी मार ले जाते हैं। उनके संबंधों का टर्नओवर उनके कारोबार से कई गुना ज़्यादा है।

उनके साथ ज़्यादातर रहना समंदर पार ही संभव हुआ। मुलाक़ातों की लंबाइयाँ कम थीं लेकिन ऊँचाइयाँ ज़्यादा। टायर जगत की हमारी कान्फ़्रेंसों में वे हमेशा भीड़ की वजह बने हैं, भीड़ का हिस्सा नहीं। जब-जब उनके हाथ में माइक आया तो यूँ लगा कि बस वे बोलते रहें...हम सुनते रहें। लाजवाब शायरी और कविताएँ उनके दिल में हमेशा धड़कती रहती हैं। उनको जानना सिर्फ़ व्यावसायिक नहीं; अपनेपन का ज़्यादा है। मोबाइल पर जब तक उनका 'संडे का फंडा' नहीं आता लगता ही नहीं कि आज रविवार है। आलोक सेठी ज़िंदगी के छोटे-छोटे सबक़ और मशवरों वाली ये प्यारी सी किताब लेकर हाज़िर हैं। मेरी नज़र में यह छोटी किताब बड़े 'बी-स्कूल्स' और बड़ी-बड़ी मैनेजमेंट वर्कशॉप से ज़्यादा बड़ी है। इसे पढ़कर भरोसा हो जाता है कि ज़िंदगी का असली इल्म उस परिश्रम और अनुभव के पसीने से टपकता है जो अपने कारोबार और ज़िंदगी के लिए ईमानदारी से बहाया गया है। बधाई आलोक भाई! उम्मीद ही नहीं मेरा अटल विश्वास है कि आपकी पाँचों किताबों की तरह यह दस्तावेज़ भी लोगों के दिलो-दिमाग़ में गहराई तक उतरेगा।

सलाम आलोक सेठी, आपके जज़्बे को, आपके कारनामे को।

❖ नीरज कंवर

मैनेजिंग डायरेक्टर - अपोलो टायर्स लि.

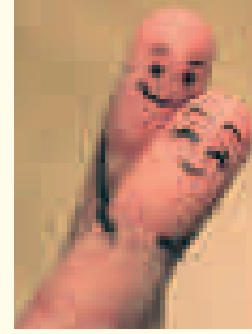
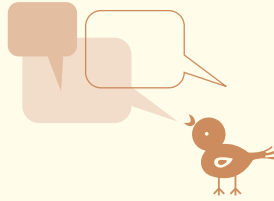
अनुक्रमणिका

।क।।।।।।।।।।



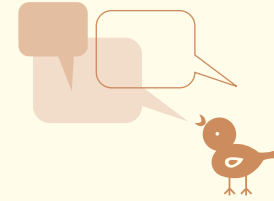
सतर्क	15
सचेत	29
सजग	37
सेहत	59

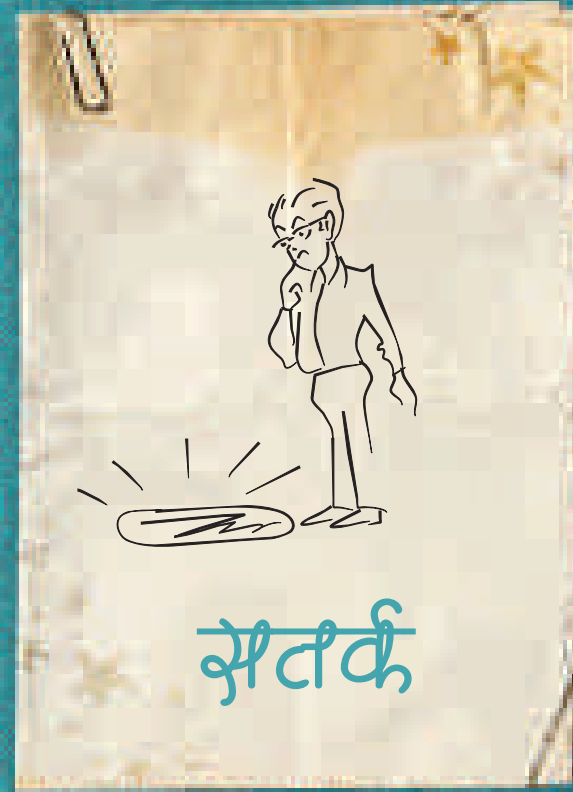
सिद्धी	69
सफ़र	77
सुयश	87
संपदा	95



सविनय	103
संबंध	117
सानंद	131
सुअवसर	149

सत्कार	159
संयम	167
सौगात	177
संचार	185







16

17

“अपने सपनों को
साकार करने से पहले
उन्हें सार्वजनिक
करने से बचें।”

“

कभी न करें - पत्नी के सामने दूसरी स्त्री की
प्रशंसा और उसके मायके की निंदा
तथा दूसरों के सामने
अपनी पत्नी व बच्चों की निंदा।

●
जब तक बेहद ज़रूरी न हो,
एडवांस देने से बचें।

●
हमेशा कम्पलीट बीमा कराएँ।
बीमा पॉलिसी को फ़ाइनल करने से पूर्व
शर्तों को ध्यान से पढ़ लें।
बीमा पॉलिसी हो या बैंक डिपॉज़िट,
नॉमिनी अवश्य अंकित करवाएँ।

”

18



‘छोटी-छोटी बातें’

“

सरकारी मसले जितने छोटे स्तर पर ही
हल हो सकें, कर लेना चाहिए।
जैसे-जैसे वह ऊपर की ओर बढ़ते जाएँगा
वैसे-वैसे अधिक ताक़त, समय व
धन लगाना पड़ सकता है।

●
अनायास विपत्ति के लिए
एक इमरजेंसी फंड
हमेशा तैयार रखें।

●
राज़ को राज़ रहने दें।
राज़ जहाँ एक से दो
तक पहुँचा वह राज़ नहीं रहता।

”

19



‘छोटी-छोटी बातें’

“

यह तथ्य स्वीकारें -
भले ही आप बहुत बार सही रहे हैं,
पर आप कभी ग़लत भी हो सकते हैं।

याद रखिये
जो व्यक्ति अंडा चुरा सकता है,
वह मुर्गी भी चुरा सकता है।
छोटा चोर मौक़ा मिलते ही
बड़ा चोर बन सकता है।

बदलाव के लिए हमेशा तैयार रहिये,
पर उसके लिए कभी भी अपने उसूलों से
समझौता मत कीजिये।

”

20



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपने बच्चों को उनके द्वारा
किये गए कार्यों के परिणाम का सामना
खुद करने दीजिये।
बच्चों को गमले के बजाय
जंगल का पौधा बनाएँ।

याद रखिए, एक अच्छी क्रीमत वह नहीं है
जो वस्तु पर छपी है,
बल्कि वह है
जितना उस वस्तु का मोल आपके लिए है।

अपनी आलोचनाओं को
सुझाव की तरह लें।

”

21



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपना दिन बहुत ही आवश्यक कार्य से
प्रारंभ करें।
कम ज़रूरी काम बाद के लिए छोड़ें।

याद रखिये
यह ज़रूरी नहीं है कि जो सही है
वह कामयाब भी हो
या फिर जो कामयाब हो सही भी हो।

कार भले ही सस्ती खरीद लें
लेकिन घर हमेशा अच्छा ही खरीदें।
घर खरीदते समय लोकेशन का
खयाल विशेष तौर पर रखें।

”

22



‘छोटी-छोटी बातें’

“

दूसरा जॉब (रोज़गार)
मिलने से पूर्व पहला न छोड़ें।

चूहों की दौड़ में न दौड़ें,
जीतकर भी आप चूहे ही कहलाएँगे।
दौड़ें शेरों की दौड़ में
क्योंकि इससे आप हारकर भी
शेर ही बने रहते हैं।

अगर आपके अक्षर अच्छे हैं
तो छोटे संदेशों को टाइप करने की जगह
पेन का इस्तेमाल करें,
ज़्यादा प्रभावी होगा।

”

23



‘छोटी-छोटी बातें’

“

रोमांचकारी, साहसपूर्ण खेलों में
हिस्सा लेने का मौका मिले
तो पीछे न हटें।
इनसे आपका डर खत्म होता है।

●
अगर आपको
मदद की ज़रूरत हो
तो उसे माँगने में
देरी न करें।

●
रूढ़ियों को तोड़ें,
पर परम्पराओं को तोड़ने वाले
पहले व्यक्ति बनने से बचें।

”

24



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी खरीद का बिल अवश्य लें।
ग्यारंटी और वापस करने की शर्त पर भी
खुलकर चर्चा करें।

●
यात्रा के समय
बैग के अंदर और बाहर आपका पता
अवश्य लिखा होना चाहिए।

●
हमेशा वैसी ही गाड़ी चलाइये
जैसी आप अपने बच्चों से उम्मीद करते हैं।
सीट बेल्ट या फिर हेलमेट भी
हमारी ही सुरक्षा के लिए है,
ट्रेफ़िक पुलिस के लिए नहीं।

”

25



‘छोटी-छोटी बातें’

“

कागज़ पर
दस्तख़त करते समय
बीच में ख़ाली जगह को
पेन से क्रॉस कर दें।

●
एक फ़र्स्ट-एड बॉक्स
अपने घर, दफ़्तर और
कार में हमेशा तैयार रखें।

●
प्रतिदिन
साफ़ और धुले हुए
मौज़े एवं
रूमाल ही वापरें।

”

26



‘छोटी-छोटी बातें’

“

‘भगवान पर विश्वास करिये’
पर वाहन को ज़रूर लॉक कीजिए।

●
सरकारी नोटिस एवं बिलों को सर्वोच्च
प्राथमिकता देकर नियत समय से पूर्व निपटाएँ।
इनमें ज़रा भी लापरवाही
बेहद महँगी पड़ती है।

●
हाई-वे पर कार पार्क करते समय
रोड को पूरा छोड़कर एकदम किनारे पर
कार साइड में लगाएँ।
रोड क्रॉस करते समय भी
पूर्णतः सतर्कता बरतें।

”

27



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी सौदे में
बारीक अक्षरों में लिखी
इबारात को नज़रअंदाज़ करना
खतरनाक हो सकता है,
उसे ध्यान से पढ़ें।

•

टूथ ब्रश हर महीने बदलें।
ये भी टॉवेल/रूमाल की तरह
बदलना ज़रूरी है।

”

28



‘छोटी-छोटी बातें’



29

“जब भी आप
शहर से बाहर जा रहे हों
तो मकान की एक चाबी
अपने किसी विश्वासपात्र
के यहाँ अवश्य रख जाँएँ।”



30

31

“

वाहन बेचने के बाद
आर.टी.ओ. रेकॉर्ड में
वाहन क्रेता के नाम
ट्रांसफ़र हुआ है कि नहीं,
जरूर चेक करें।
इस मामले में लापरवाही
बाद में बेहद दुःखदायी हो सकती है।

जब भी कर्ज़ लेने जाएँ,
इस बात का विशेष ध्यान रखें कि
कर्ज़दाता को ऐसा न जताएँ
कि आपको इसकी
बहुत ज़्यादा ज़रूरत है।

”

32



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जीवन में कुछ व्यक्ति
ऐसे भी मिल सकते हैं
जो ज़माने के लिए खराब हों
पर आपके लिए अच्छे हों...
ऐसे व्यक्तियों से हमेशा बचकर रहें,
वह किसी दिन आपके लिए भी
खराब हो सकते हैं।

ऐसी चीज़ें कभी न खरीदें
जिनकी पैकिंग पहले ही खुल चुकी हो
या खुली हुई प्रतीत होती है।
खुली चीज़ यदि सस्ती मिल रही हो
तब भी न खरीदें।

”

33



‘छोटी-छोटी बातें’

“

बच्चों को ऐसे गेम्स दें
जो उनकी सोच से चलते हों बजाय कि बैटरी से।
ऐसे खेलौनों को प्राथमिकता दें
जिनसे उनका मानसिक विकास हो।

●
बच्चे का बर्थ सर्टिफिकेट
उनके जन्म के तुरंत बाद बनवाएँ।
बच्चों के जन्म लेते ही उनकी पढ़ाई के लिए
बचत करना प्रारंभ कर दें।

●
अगर हम बिना ज़रूरत की चीज़ें खरीदते रहे
तो शायद कभी वह दिन भी आ सकता है
जब हमें ज़रूरत की चीज़ें बेचना पड़ें। ”

34



‘छोटी-छोटी बातें’

“

मत कीजिए - हर सुनी बात पर भरोसा।
ऐसी बातों को पहले
अपनी कसौटी पर भी कस कर जाँचिए।

●
अपनी याददाश्त पर कभी घमंड न करें।
ज़रूरी बातें लिख कर रखें।

●
खरीददारी करने में उन्हें प्राथमिकता दें
जो आपके साथ व्यापार करते हों
तथा आपकी कसौटी पर खरे उतरते हों,
कभी भी घमंडी या लालची दुकानदार से
सामान न खरीदें चाहे वह वस्तु आपके लिए
कितनी ही ज़रूरी क्यों न हो। ”

35



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर कोई आपको
एक बार धोखा देता है
तो उस पर लानत है,
किंतु वही व्यक्ति आपको
दोबारा धोखा देता है
तो आप पर लानत है।

कोशिश करें कि
ब्रांडेड चीजें ही खरीदें।
इससे आपको
'ऑफ़्टर सेल्स सर्विस'
का इत्मीनान रहता है।

”

36



‘छोटी-छोटी बातें’



37



38



“चेतावनी में
हम क्या कर सकते हैं....?
यह कभी नहीं बताएँ वरना....
प्रतिद्वंदी को हमारे
युद्ध कौशल का
पता लग जाएगा।”

39

“

अगर आपको पूरे परिवार के साथ
बाहर जाना हो तो किसी व्यक्ति को
आपके अखबार एवं चिट्ठियाँ
उठाने के लिए कह दें।
अन्यथा इसी लापरवाही के चलते
अपराधी जान जाते हैं कि
आप बाहर गए हुए हैं।
हो सके तो किसी परिचित को
रात में घर के बाहर की लाइट
चालू करने का कह जाएँ और
बैठक या शयनकक्ष की
एक लाइट तो
चालू करके जाएँ हीं।

”

40



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर सुबह जल्दी उठना हो तो
रात भर चिंता करने से बेहतर है
कि अलार्म भर लें।
मोबाइल की जगह
घड़ी से अलार्म भरें।
मोबाइल अपने से दूर रखकर सोएँ।



ड्रायवर की नियुक्ति से पहले
उसका लायसेंस
बारीकी से चेक करें।
उसकी एक फ़ोटोकॉपी भी
अपने पास रखें।

”

41



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर आप
 किसी कार्यक्रम में मंच पर बैठे हों
 तो यह मानकर चलें
 कि सारी आँखें
 आपकी ओर लगी हैं,
 ऐसे कार्यकलापों से अपने को बचाएँ
 जो मंच की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हो।
 मंच पर होने वाली प्रस्तुतियों पर
 ध्यान देने और उत्साहवर्धन करने की
 नैतिक ज़िम्मेदारी भी
 श्रोताओं की तुलना में
 आपकी ज़्यादा है।
 अन्य वक्ताओं को भी ध्यान से सुनें।

”

42



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर आपको चश्मा लगता हो
 तो शहर से बाहर जाते समय
 अतिरिक्त चश्मा साथ रखें।
 ●
 बिजली, नल फ़िटिंग के सामान
 खरीदते समय कभी भी
 क्रिस्म से समझौता न करें।
 हल्की एसेसरीज़ न खरीदें।
 ●
 जब आप भुगतान कर रहे हों
 तो विनम्रता से
 डिस्काउंट
 के बारे में अवश्य पूछें।

”

43



‘छोटी-छोटी बातें’

“

घर में सभी चाबियों के लिए
एक नियत स्थान तय होना चाहिए,
घर में प्रवेश करते ही
वाहन की चाबी वहीं रखें।
जरूरी चाबियों की नक़ल
जरूर बनवाकर रखें।



हमेशा बचें -
जब भी आप बेहद गुस्से में हो
तब कोई भी निर्णय लेने से
और जब भी बेहद खुश हों
तब कोई वादा करने से।

”

44



‘छोटी-छोटी बातें’

“

यदि बच्चों के लिए
होस्टल देख रहे हों तो वहाँ का खाना
अवश्य खाइये,
क्योंकि यही चीज़
आपके बच्चों के लिए
सबसे ज़रूरी है।



समाचार पत्र नियमित पढ़ें,
अगर समय न हो तो
भले सिर्फ़ हेडलाइन पढ़ें
पर समाचार पत्र को
शुरू से अंत तक पूरा पढ़ें।

”

45



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपनी जेब या पर्स में
एक कागज़ पर लिखकर रखें...
आप पर विपत्ति आने पर
उन्हें सूचित किया जा सकता है
उनका नाम, पता, फ़ोन नंबर,
आपके डॉक्टर्स का फ़ोन नंबर,
आपका ब्लडग्रुप, आपकी मेडिकल हिस्ट्री।

पर्यावरण मित्र बनें।
जैसे... प्लास्टिक थैली को न कहें।
पानी बहने से बचाएँ।
रेड सिग्नल पर वाहन बंद कर दें इत्यादि।”

46



‘छोटी-छोटी बातें’

“

दूसरे शहर की यात्रा
करते समय
कहाँ ठहरेंगे एवं
किस-किस से मिलने वाले हैं
इसकी जानकारी
(संभव हो तो मोबाइल नंबर भी)
परिजनों को देकर जाएँ।

पैनकार्ड, ड्रायविंग लायसेंस,
मतदाता परिचय पत्र
की तस्वीर
मोबाइल में सेव कर रखें।”

47



‘छोटी-छोटी बातें’

“

सामान खरीदने जाते समय
घर से झौला, बेग या थैला
ले जाने में शर्म न करें।



अपने क्रीमती सामान के लिए
बैंक लॉकर्स का उपयोग करें।



कभी-कभी अलग रास्तों से
भी आते-जाते रहें,
बदलते शहर से
पहचान बनी रहती है।

”

48



‘छोटी-छोटी बातें’

“

कोई भी ऑफ़र अगर बाज़ार मूल्य से
बेहद कम क्रीमत में मिल रहा है
तो उसकी सारी कंडीशन्स
अच्छी तरह समझ लें।
ऑफ़र के ऊपर लगे स्टार के पीछे
बहुत सारे झूठ छिपे होते हैं।



किसी भी एग्रीमेंट पर साइन करने से पूर्व
अच्छी तरह पढ़कर समझ लें
और उसकी एक फ़ोटो कॉपी करवाकर
अपने पास संभालें।
किसी भी नोटिस के जवाब की
एक प्रति अपने पास अवश्य संभालें।

”

49



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपने हुलिये पर ध्यान दें।
ऐसी शैली विकसित करें कि
लोग आप पर ध्यान दें।
बहुत से काम क्राबिलियत से ज़्यादा
व्यक्तित्व से हो जाते हैं।

कहीं भी कोई पंक्ति, शायरी, कविता,
एस.एम.एस. या संस्मरण
पढ़ने-सुनने में आए जो आपको
प्रभावित कर जाए
तो उसे डायरी में नोट कर लें।
इनमें से चुनिंदा हमेशा
याद रखने की कोशिश करें।

”

50



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी पुस्तक को पढ़ने से पूर्व
शुरूआत में लिखी प्रस्तावना अवश्य पढ़ें।
यह आपको पुस्तक और लेखक को
समझने में मदद करती है।

किसी भी सेवा या उत्पाद की
गुणवत्ता में अगर कमी पाते हैं तो
पूरी विनम्रता के साथ
अपनी बात उन तक
अवश्य पहुँचाएँ।

हमेशा उच्च कोटि वाला
सामान ही खरीदें।

”

51



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जब आप कोई पता ढूँढ रहे हों
तो रास्ता पूछने में बिल्कुल भी संकोच न करें।
एक व्यक्ति द्वारा बताए गए रास्ते को
आगे जाकर दूसरे से कन्फर्म भी करें।

किराने की दुकानों पर, कॉलेज में,
बुक स्टोर पर या लॉन्ड्री पर
लगे हुए बुलेटिन बोर्ड्स ज़रूर पढ़ें,
वहाँ बहुत सारी रोचक और महत्वपूर्ण
जानकारियाँ पाएँगे।

कभी भी पाइप, सीढ़ी, बिजली के वायर
जितनी ज़रूरत हो उससे ज़्यादा लंबे खरीदें।”

52



‘छोटी-छोटी बातें’

“

टाई, जूते, बेल्ट व अन्य एसेसरीज़ खरीदने में
कंजूसी न करें, यह आपके व्यक्तित्व को और
प्रभावशाली बनाते हैं।

किसी प्रसंग की प्रतीक्षा किये बग़ैर अपने
प्रियजनों के पते और फ़ोन नंबर
अपने पास हमेशा तैयार रखें।

अपने साथ कोई शासकीय मान्यता प्राप्त
आइडेंटिटी प्रूफ़
सदैव साथ रखें।

अलमारियों के ड्रावर्स
हर हफ़्ते साफ़ करते रहें।”

53



‘छोटी-छोटी बातें’

“

एक पेन और छोटा नोट पेड
सदैव अपने पास रखिए;
ज़रूरी बात नोट करने के लिये।
मस्तिष्क में विचार कभी भी आ सकते हैं,
उन्हें नोट करने में कोताही न बरतें।

कितना ही फ़िज़ूल सुझाव हो,
उसे तुरंत खारिज न करें।
कई बार पहली बार में नापसंद बात
गहराई से सोचने पर काम की निकल जाती है।
एक अच्छे विचार को
सिर्फ़ इसलिए मत नकारिये कि
आपको उसका स्रोत पसंद नहीं।

”

54



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर कोई आपकी
प्रशंसा कर रहा है
तो उसमें अपनी तरफ़ से
प्रशंसा की पंक्ति नहीं जोड़ें।

जब आप बच्चों के साथ
खेल रहे हों तो उन्हें जीतने दें,
यह कोई प्रतिस्पर्धा नहीं
बल्कि सीखने की प्रक्रिया है,
बच्चों को उनकी त्रुटियाँ बताएँ
पर अच्छे कार्य के लिए
प्रोत्साहित अवश्य करें।

”

55



‘छोटी-छोटी बातें’

“

मकान में समय-समय पर
रंग-रोगन अवश्य कराते रहें।
यह सिर्फ बाहरी सौंदर्य ही नहीं
बल्कि मकान की
उम्र बढ़ाने के लिए
बेहद ज़रूरी है।
कभी भी आपको अपना मकान
पेंट करवाना हो तो
दीपावली के
बिल्कुल आसपास न करवाएँ,
सही व्यक्ति नहीं मिलते;
काम हड़बड़ी में होता है;
पैसा ज़्यादा लगता है।

”

56



‘छोटी-छोटी बातें’

“

हमेशा श्रेष्ठतम इलेक्ट्रिशियन,
प्लम्बर, डॉक्टर, वकील और
ड्रायवर को ही चुनें।
वे चाहे कितने ही महँगे हों।

●

अगर कोई आपके चरित्र का
अनुसरण कर रहा है तो इस बात का
ध्यान रखें कि आपसे कहीं कुछ ऐसा न हो कि
उसे अपने निर्णय पर पुनर्विचार करना पड़े।

●

हिंसक कार्यक्रम न देखें और न ही
ऐसी प्रवृत्तियों को प्रेरित
करने वाले सामान खरीदें।

”

57



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आप सामान्य व्यक्ति हों या
अमीर, वसीयत अवश्य लिखें।

हर कपड़े पर उसकी
वॉशिंग इंस्ट्रक्शन लिखी होती है,
कृपया उसे पढ़ें और घर में बताएँ।

अपने ए.सी. एवं कूलर
फ़रवरी-मार्च में तैयार करवा लें।
गर्मीं लगते ही इनके कारीगर
मिलने कठिन हो जाते हैं।

”

58



‘छोटी-छोटी बातें’



59



“जीवन में ‘सेफ़्टी’ से
कभी समझौता न करें।
ध्यान रहे !
ज़िंदगी न मिलेगी दोबारा।”



“

जब तक कोई आपसे पूछे नहीं
कभी भी किसी को
देशी इलाजों के नुस्खें न बताएँ
न ही अपनी
चिकित्सकीय आजमाइशों
का ज्ञान बघारें।

स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल
जिन खाद्य पदार्थों के लिए
भविष्य में डॉक्टर पूरी तरह मना कर दें,
उससे बेहतर है कि
उसे आज से ही
सोच समझ कर ग्रहण करें।

”

62



‘छोटी-छोटी बातें’

“

दवाइयाँ
उपयोग में लेने से पूर्व
डॉक्टर के पर्चे से
उनका मिलान कर लें।
एक्सपायरी डेट भी
अवश्य देख लें।

सुबह पहले फल खाएँ,
नाश्ता बाद में।
प्रतिदिन कम से कम एक मौसमी फल
अवश्य खाएँ।
भोजन से पूर्व एक प्लेट सलाद
खाना फ़ायदेमंद रहता है।

”

63



‘छोटी-छोटी बातें’

“

चाहे योगाभ्यास करें या
जिम जाएँ,
मार्निंग वॉक करें या
कोई अन्य व्यायाम करें
पर दिन में कम से कम एक घंटा
अपने शरीर के लिए अवश्य दें।



अगर आपको इंजेक्शन लगवाना हो तो
सुबह 9 बजे लगवाएँ।
इस समय दर्द को कम करने वाला
एड्रिनलिन हार्मोन शरीर के भीतर
ज़्यादा मात्रा में निकलता है।

”

64



‘छोटी-छोटी बातें’

“

एक उम्र के बाद अपना
मेडिकल चेकअप
नियमित रूप से कराते रहें।
इससे संभव है
कोई बड़ी विपदा
आने से पूर्व
आपको चौकन्ना कर दे।



अगर आप
डाइटिंग कर रहे हैं
तो उसे
प्रचारित करने से बचें।

”

65



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जहाँ तक संभव हो सके
लिफ़्ट की जगह
सीढ़ी का उपयोग करिये।
आपको अपनी फ़िटनेस में मदद होगी।

जब भी कोई प्रियजन बीमार हों तो
याद रखें उम्मीद और
सकारात्मक विचार ही श्रेष्ठ दवाएँ हैं।
अगर मिलने हॉस्पिटल में गये हों
तो मरीज़ का अधिक समय न लें।
सुझाव देना अच्छी बात है
पर उसे थोपने से भी बचें।

”

66



‘छोटी-छोटी बातें’

“

घर में वज़न करने वाली
मशीन रखें जिससे
समय-समय पर
आप अपना वज़न करते हुए
उस पर नज़र रखें।

मोबाइल में दाहिनी तरफ़ के कान से
बात करने से बचें।
बैटरी डाउन होने का
सिग्नल आने पर भी बात बिल्कुल न करें।
यह बेहद घातक है।
लंबे वार्तालाप लैण्डलाइन से ही करें।

”

67



‘छोटी-छोटी बातें’

“

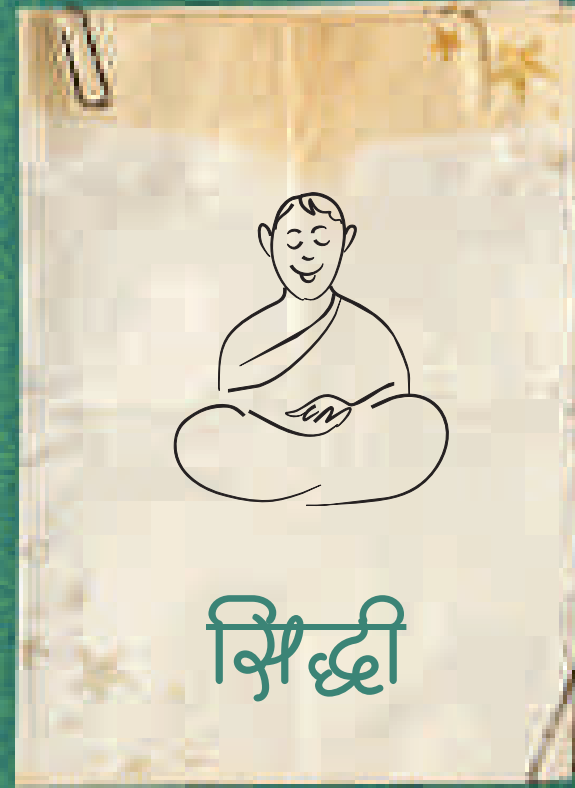
डॉक्टर का चयन करने में
पूर्ण सावधानी बरतें,
खूब जाँच-पड़ताल कर लें...
पर जब एक बार
उनकी शरण में चले जाएँ तो
उनकी कही बातों पर अमल करें।

”

68



‘छोटी-छोटी बातें’



69

“अगर बड़ा युद्ध
जीतना चाहते हैं तो
छोटी-छोटी लड़ाइयाँ
हारने के लिए तैयार रहिये।”



70



71

“

नया संगीत, फ़िल्में, साहित्य, फ़ैशन
जैसे नये परिवर्तनों से
स्वयं को जोड़कर रखें।
यह आपको चिरयुवा
रखने में सहायक होंगे।

●
बहस के समय अपनी आवाज़ को
ऊँचा न उठाएँ बल्कि अपने तर्कों के
वज़न को बढ़ाएँ।

●
अपने बच्चों को पैसे का महत्व
एवं उसे बचाने के
तरीक़े बताते रहिये।

”

72



‘छोटी-छोटी बातें’

“

बच्चों को कभी-कभार अनाथ आश्रम,
ब्लाइंड स्कूल, वृद्धाश्रम, कुष्ठ आश्रम,
चिड़ियाघर इत्यादि अवश्य ले जाएँ;
उनमें दया भावना उपजेगी।

●
लोगों के साथ अपना व्यवहार दयालु रखें,
विशेषकर जब आपके बच्चे साथ हों।
बच्चों को दयालु बनाना
आपका नैतिक दायित्व है।

●
किसी और को बदलने की
कोशिश से पहले सोचिये
खुद को बदलना कितना मुश्किल है।

”

73



‘छोटी-छोटी बातें’

“

मौक़ा-ब-मौक़ा बच्चों को किसान,
मैकेनिक और मज़दूर को
परिश्रम करते हुए ज़रूर दिखाएँ।

पढ़ने का कोई भी मौक़ा हाथ से न जाने दें,
विशेषकर बीमारी, छुट्टियों एवं यात्राओं के
समय किताबें सबसे अच्छी मित्र हैं।

छोटे-छोटे लेकिन महत्वपूर्ण
काम सीखते रहें मसलन टाई बाँधना,
कार में टायर बदलना।

”

74



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जागरूक रहें।
प्रश्न पूछने में संकोच न करें।

सार्थक बहस के समय
दूसरों की बातें समझने के लिए सुनें,
सिर्फ़ जवाब देने के लिए नहीं।

याद रखिए...
अपने सपने बच्चों पर कभी नहीं थोपें,
उनके सपनों को
साकार करने में मदद करें।

”

75



‘छोटी-छोटी बातें’

“

बेवजह झूठ बोलने से बचें।
 आपकी इमेज एक सच बोलने वाले
 व्यक्ति की बन जाएगी।
 ऐसे में कभी बेहद ज़रूरी होने पर
 आपका झूठ विश्वसनीय होगा
 अन्यथा सच पर भी कोई यकीन नहीं करेगा।



ये न सोचें कि आप सफलता
 मिलने पर सुस्ता सकते हैं
 क्योंकि सफलता काम करने पर ही मिली है
 और अपने साथ ढेर सारी ज़िम्मेदारियाँ भी
 लेकर आती है।

”

76



‘छोटी-छोटी बातें’



77

“यात्राएँ कीजिए, नई जगह देखिए,
पर्यटन से बड़ा कोई स्कूल नहीं।
साल में एक बार ऐसी जगह अवश्य जाएँ
जहाँ पहले कभी न गए हों।”



78

79

“

जिस भी होटल में ठहरे हों
उसके पते का एक-एक कार्ड
सभी सहयात्रियों की जेब में ज़रूर रखें।

●
अपने परिवार को छुट्टियों पर
अवश्य कहीं ले जाएँ।
अपने नज़दीकी रिश्तेदारों,
बहनों, भाइयों, बुआओं के
परिवारों के साथ साल में
कम से कम एक टूर प्लान करें।
इससे मिलने वाली खुशी
अनमोल होगी ही,
संबंधों में प्रगाढ़ता भी आएगी।

”

80



‘छोटी-छोटी बातें’

“

पर्यटन की तैयारी करते समय
ट्रैवल एजेंट की मदद लें।
भले ही इसमें पैसा ज़्यादा लगता है,
पर वह सुविधा और समय की तुलना में
सस्ता पड़ता है।

●
अपनी पासपोर्ट साइज़ फ़ोटो
हमेशा तैयार रखें और उसे
समय-समय पर रिन्यू करते रहें।

●
यात्रा के दौरान दिन समाप्त होने पर
पाँच मिनट का समय निकालें एवं
दिन भर का ब्यौरा नोट कर लें।

”

81



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी पर्यटन स्थल पर
घूमते समय गाइड अवश्य बुक करें
उसके द्वारा दी गई जानकारी
हर क्रीमत में सस्ती है।

रिज़र्वेशन के पश्चात् रेलवे,
एयर टिकट में दिनांक, समय, शहर
आदि एक बार अवश्य चेक कर लें।

यात्रा में नियमित तौर पर
लगने वाले ज़रूरी सामान की
चैकलिस्ट हमेशा बनाकर
रख लेना चाहिए।

”

82



‘छोटी-छोटी बातें’

“

एअरपोर्ट एवं फ़्लाइट कर्मचारियों से
विवाद करने से बचें। क़ानूनन उनके अधिकार
आपसे कई गुना ज़्यादा होते हैं।

पर्यटन यात्रा पर जाते समय
अपने रूट की जानकारी, होटलों के पते,
फ़ोन नंबर, टूर इंचार्ज के नंबर,
अपने परिजनों/परिचितों
के पास अवश्य छोड़ जाएँ।

विशेषकर यात्राओं में ख़रीददारी के समय किसी
भी वस्तु का भाव अपनी ओर से तभी बोलें जब
वह लेना हो अन्यथा विवाद हो सकता है।

”

83



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जहाँ भी यात्रा पर जा रहे हों
वहाँ के कुछ परिचितों के नाम पते,
फ़ोन नंबर अपने पास अवश्य रखें...
इमरजेंसी में बेहद मददगार साबित होते हैं।

यात्राओं में अपने परिजनों,
परिचितों से नियमित संपर्क/संवाद
अवश्य बनाएँ रखें।

टूर गाइड, होटल, सहयात्री, टैक्सी या
बस ड्रायवर इनके कॉन्टेक्ट नंबर
अपने पास अवश्य सेव करें।
इमरजेंसी में बेहद कारगर होते हैं।

”

84



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी अपरिचित के लगेज की
न तो ज़िम्मेदारी लें और न ही दें।

पुस्तकों से, इंटरनेट से, मित्रगणों से,
जहाँ जा रहे हैं वहाँ की जानकारी
पहले से लेकर जाने में सुविधा रहती है।

किसी भी पर्यटन यात्रा के समय
वहाँ के ड्रायवर से दोस्ताना संबंध रखें
वह आपका सबसे बेहतर गाइड हो सकता है।
यही वह शरूस् है जो आपकी यात्रा के
आनंद को दुगुना भी कर सकता है
और किरकिरा भी।

”

85

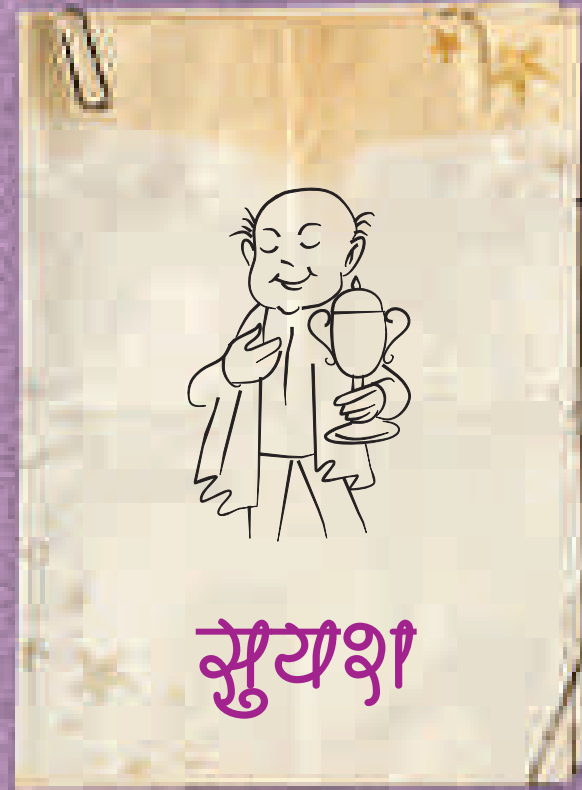


‘छोटी-छोटी बातें’

“

यात्रा से लौटने के बाद
होटल, ट्रेवल एजेन्सी
या कोई अन्य व्यक्ति
ऐसा मिला हो
जो आपका अच्छा मित्र हो सकता है
तो उसे सद्भावना का
एक ई-मेल, एस एम एस या
पत्र अवश्य प्रेषित कीजिये।

”

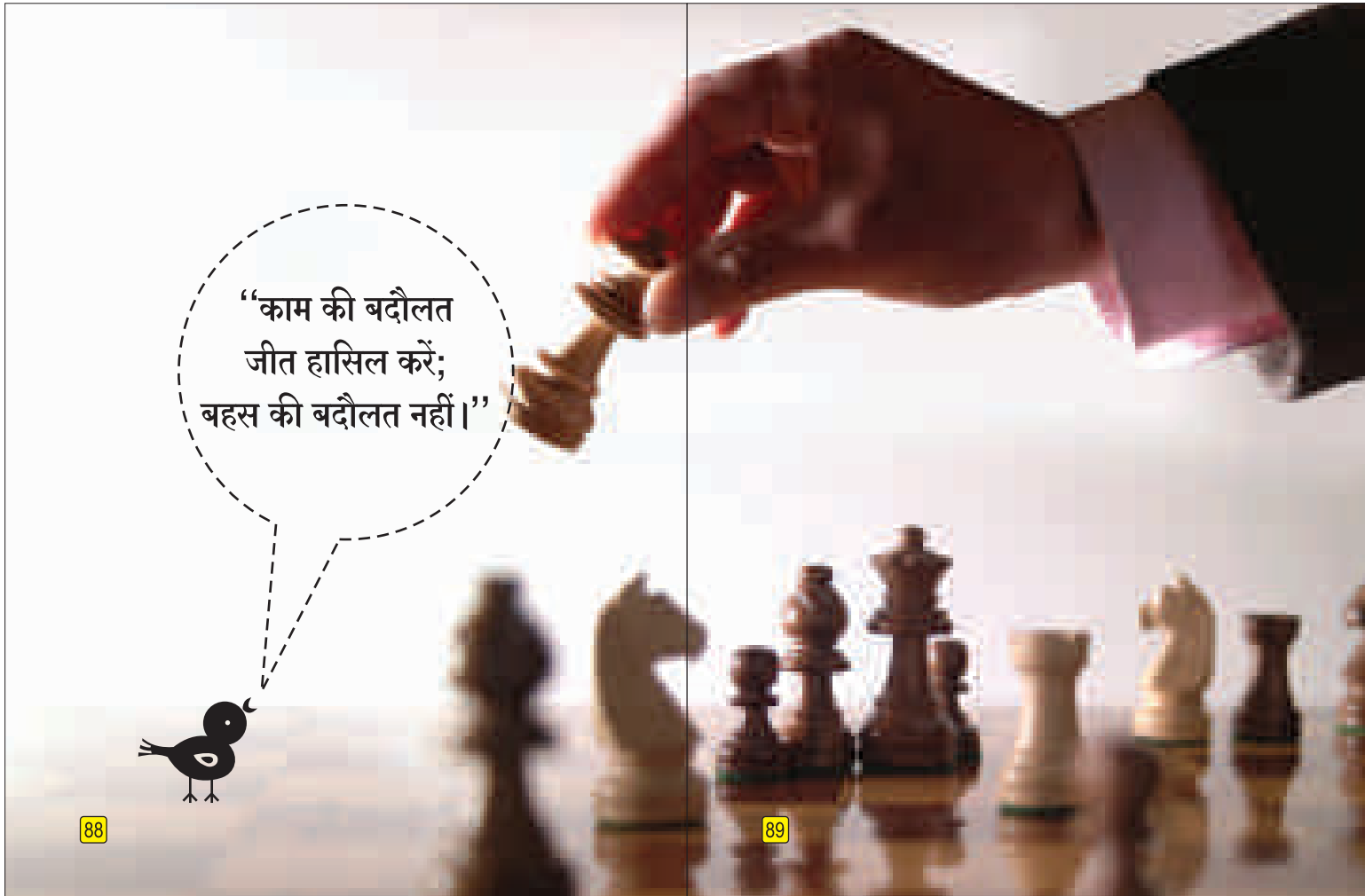


“काम की बदौलत
जीत हासिल करें;
बहस की बदौलत नहीं।”



88

89



“

आपका गुस्सा ठंडा होने पर
अगर आपको लगता है कि
व्यवहार में आपसे कहीं
चूक हुई हो गई है
तो खेद अवश्य प्रकट करें,
खासकर अपने परिवारजनों से।



आप किसी को दिये गये समय पर
न पहुँच पा रहे हों तो
समय पूर्व फ़ोन पर
क्षमायाचना के साथ
सूचित करें।

”

90



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर आप किसी का
क्रज़ नहीं चुका पा रहे हों
तो उसकी छोटी-छोटी ही सही
किश्त अवश्य अदा करते रहें।
देरी होने पर तक्रादा आए,
उससे बेहतर है कि देरी के लिए
क्षमायाचना सहित
हम उन्हें सूचित करें।



किसी पर की गई दया
उसे बार-बार याद न दिलाएँ।
कुछ अच्छा कीजिए और भूल जाइए।

”

91



‘छोटी-छोटी बातें’

“

उधार ली हुई वस्तु याद रख कर
अच्छी हालत में लौटाएँ।
अगर हो सके तो धन्यवाद की
टीप लिखकर भेजें।
किसी से मांगा हुआ वाहन वापस
करते समय ईंधन भरवाकर वापस करें।

अगर लोगों में अपना रसूख
बनाए रखना चाहते हैं
तो अपनी प्रतिष्ठा पर दाग
लगने से बचाए रखिए,
इसे अपनी ज़िंदगी से
ज़्यादा महफूज रखिए।

”

92



‘छोटी-छोटी बातें’

“

हर वक़्त मौजूद रहने से या
ज़्यादातर दिखाई देने से अहमियत कम होती है।
इसलिए बिना ज़रूरत न दिखाई दें।

अभिमान ना करें लेकिन
अपना स्वाभिमान भी बरकरार रखें।
किसी के यहाँ कितनी देर
के लिये जाना है इस पर विचार करें।

ज़िंदगी में सबसे बड़ा बोझ है,
किसी बोझ का न होना...
रिटायरमेंट के बाद भी छोटे-मोटे काम में ही सही
पर स्वयं को व्यस्त रखें।

”

93



‘छोटी-छोटी बातें’

“

मुख्य धारा से लंबे समय तक
कटे रहने से आप खुद को बाहर कर लेंगे।

अगर कहीं आप चूक पर हैं
तो लोग उसे अंडरलाइन करें
इससे पहले ही स्वयं स्वतः स्फूर्त
उसे स्वीकार करें।

अपना दुःख दूसरों को तब ही बताएँ
जब आप आश्वस्त हों कि वह भी
उसे सुनकर व्यथित होगा। अन्यथा आपका
अपना दुःख सुनकर 50 प्रतिशत लोग भूल
जाते हैं; शेष 50 प्रतिशत प्रसन्न होते हैं।”

94



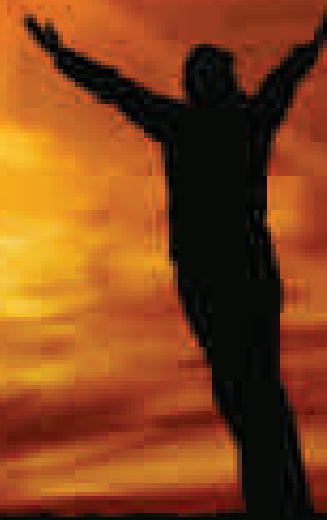
‘छोटी-छोटी बातें’



95

“आपकी महत्ता तब तक है
जब तक आपके पास
ऐसा कुछ हो जो पैसे से भी
खरीदा नहीं जा सकता।”

96



97

“

उम्मीद से ज़्यादा मुनाफ़ा
देने वाले व्यावसायियों,
निवेशों और अवसरों में
हाथ डालने से पहले उसे
हर कसौटी पर रखकर चैक कर लें।
ज़्यादा मुनाफ़ा-ज़्यादा जोखिम।

पैसे बचाने की नहीं,
कमाने की ओर नज़र रखें।
जितनी चादर है, उतने ही पैर फैलाने की
कहावत पुरानी हो गई।
पाँव मोड़ने के बजाय,
चादर बड़ी करने का ज़माना आ गया है।

”

98



‘छोटी-छोटी बातें’

“

हमेशा अधिक तनख्वाह वाले
कर्मचारी रखिए, ये हर हाल में सस्ते पड़ते हैं।
जब तक आप स्वयं पूर्ण रूप से संतुष्ट न हों,
धन संबंधी मामलों में किसी की भी
ग्यारंटी लेने से बचें।

कभी भी अपनी धन-सम्पदा का
बख़ान उनके सामने न करें
जिनके पास आपसे कम पैसा हो।
जिनके पास आपके बराबर या
आपसे अधिक पैसा है उनके सामने
बख़ान करने की ज़रूरत ही क्या है।

”

99



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर आप किराये के मकान या दुकान में हैं
तो अनुकूल परिस्थिति के आते ही
स्वयं का मकान/दुकान खरीद लें।
किराये से बेहतर है किस्त चुकाना।

●
दूसरों की तरक्की से न जलें।
उनसे ईर्ष्या के बजाय उनसे
सीखने का प्रयास करें।

●
खुद काम करके
आप अपना पेट भर सकते हैं,
काम करवाकर ही
आप आगे बढ़ सकते हैं।

”

100



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आदमी जितना काम करने में नहीं थकता,
उससे ज़्यादा थकता है
उसे पेंडिंग रखने में।

●
छोटी-छोटी कंजूसी से
आप अमीर तो नहीं बनेंगे
पर दुःखी ज़रूर हो जाएँगे।

●
अपना समय लोगों को
आगे की ओर बढ़ाने में लगाएँ
न कि नीचे गिराने में।
लोगों के काम आते रहें।
यकीनन बड़े आदमी बन जाएँगे।

”

101



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आप चाहें नौकरीपेशा हों या व्यवसायी,
रिटायरमेंट के बाद की आमदनी की ठोस
प्लानिंग अवश्य करें।

●
व्यापार-व्यवसाय में चाहे जितनी भी रिस्क लें
पर इन्वेस्टमेंट में रिस्क कभी नहीं।
चाहे रिटर्न कम भी आए, पर इन्वेस्टमेंट वहीं करें
जहाँ आपका मूलधन
शत-प्रतिशत सुरक्षित हो।

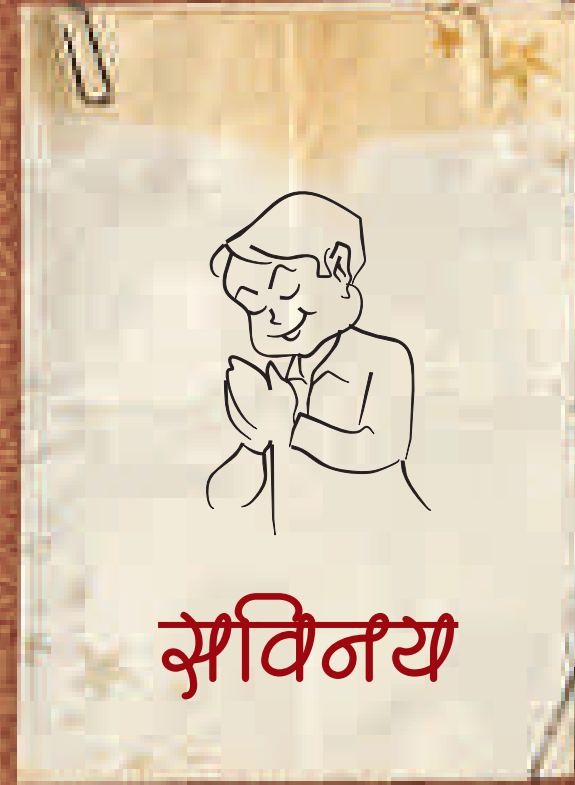
●
अपने व्यवसाय, उद्योग, कार्यक्षेत्र
के क़ानूनी प्रावधानों को स्वयं समझें
और जागरूक रहें।

”

102



‘छोटी-छोटी बातें’



103



104

“मैं की जगह ‘हम’
और मेरे की जगह
‘अपने’ की बात करें...
लोग खुद-ब-खुद
आपसे जुड़ते जाएँगे।”

105



“

आपसी बातों को लेकर
उठने वाले अधिकतर विवादों का कारण
बात रखने की शैली या
तरीका होता है।
'आपने क्या कहा'
से ज़्यादा यह महत्वपूर्ण होता है कि
'आपने कैसे कहा'।

फ़र्क नहीं पड़ता आप
कितने ही बड़े हो गए हों,
जब भी अपनों से मिलें
उन्हें भरपूर सम्मान दें।

”

106



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर आपके पास शत्रु के लिए
कुछ अच्छा करने का मौका आता है
तो उसे ना चूकें।
इससे वह आपका कृतज्ञ ना भी हो पाया
तो कम से कम
शर्मिंदा तो अवश्य ही होगा।

अगर कोई आपको कुछ बता रहा हो,
तो उसे आपके हाव-भाव से
यह लगना चाहिए कि
आप भी उसे उतने ही
इत्मीनान से सुन रहे हैं।

”

107



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपने पास आए आमंत्रण पत्रों का
सम्मान करते हुए
उन आयोजनों में ज़रूर जाएँ।
अगर ना जा पाएँ तो पत्र लिखकर
क्षमा माँगते हुए बधाई प्रेषित करें।
चाहे दो शब्द लिखिए
पर स्नेहीजनों के आए पत्र व
एस.एम.एस. का जवाब अवश्य दीजिये।

अगर कोई आपसे मिलने आए
तो उस समय आप कितना ही
प्रिय कार्यक्रम क्यों न देख रहे हों
अपना टी.वी. बंद कर दें।

”

108



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी व्यक्ति के बारे में
अनुमान उनके रिश्तेदारों से मत लगाइये।
साथ ही किसी के धन से
प्रभावित होने से पहले
यह भी देख लें कि उन्होंने
धन किस तरह कमाया है।

कभी-कभी उन व्यक्तियों
से भी मिलते रहें,
जिनके विचार आपसे विपरीत हैं।
आलोचनाएँ सुनिये,
वे आपको सुधार के लिए
प्रेरित करेंगी।

”

109



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी के समाज, व्यवसाय,
पसंदीदा व्यक्ति, राजनैतिक दल या
उसकी आस्था पर
प्रतिकूल टिप्पणी करने से बचें।

चाहे किसी से आपके
कितने भी मतभेद क्यों न रहे हों,
पर जब कोई आपकी शरण में आए
और वह मानसिक व
व्यवहारिक तौर से
सुधरना चाहे तो उसका
हौंसला बढ़ाएँ।

”

110



‘छोटी-छोटी बातें’

“

एक उम्र गुज़र जाने के बाद
बुज़ुर्गों से उनकी जीवन-शैली में
बदलाव की उम्मीद नहीं करना चाहिए।
हम स्वयं को उनके अनुसार ढाल लें,
ज़्यादा बेहतर है।

अपने माता-पिता को सारी व्यवस्थाओं
के साथ उनकी भावनाओं के अनुसार
तीर्थ-पर्यटन स्थल, सामाजिक,
धार्मिक आयोजनों में भेजते रहें।
अगर स्वयं भी साथ में जा सकें
तो और बेहतर है।

”

111



‘छोटी-छोटी बातें’

“

कृपया...! धन्यवाद...! जी हाँ...!
जैसे शब्द आपको और विनम्र बनाते हैं।
‘उसके’ की जगह ‘उनके’
‘बोलो/बोलें’ की जगह बोलिये/जी कहिये
जैसे शब्दों को
अपने संवाद में शामिल कीजिये।

हम अपने जीवन साथी
से तो उम्मीद करते हैं।
कि वह हमारे माता-पिता का
भरपूर ख्याल रखे...
पर क्या हम उनके माता-पिता की भी
चिंता रखते हैं, इस पर गौर करें।

”

112



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपने स्कूली जीवन के शिक्षकों,
दोस्तों से मिलते रहें, ये वे लोग हैं
जो बिना स्वार्थ के आपके साथी थे।

बुजुर्गों से सलाह-मशवरा करते रहें।
उनके चेहरों की झुर्रियों में अनुभव के
न जाने कितने खज़ाने छिपे होते हैं।
मानना, नहीं मानना आपकी मर्जी है,
पर ज़रूरी विषयों पर उनसे बात अवश्य करें।

अपने बोलने की ताकत का उपयोग
कभी भी उनके सामने नहीं करें
जिन्होंने आपको ‘बोलना’ सिखाया है।

”

113



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आपके माता-पिता से
आपका व्यवहार तय करेगा कि आपके बच्चे
आपसे कैसा व्यवहार करने वाले हैं।

जब किसी को सॉरी या धन्यवाद
कह रहे हों तो संबंधित व्यक्ति की
आँखों में आँखें डालकर कहें
अर्थात् उसे दिल से स्वीकार करें।

अपने माता-पिता का सम्मान अवश्य करें...
पर साथ ही उसकी भावनाओं को भी समझें
जो अपने माता-पिता को छोड़कर
आपके पास आई है।

”

114



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आप जहाँ भी रह रहे हैं
वहाँ की क्षेत्रीय भाषा
आपको अवश्य आनी चाहिए।
वह स्थानीय लोगों से आपको जीवंत रखेगी।

यह बात ध्यान रखें कि आपकी सफलता
इस बात पर निर्भर करती है कि आपके
आसपास के लोगों के साथ
आप कैसा व्यवहार करते हैं।

अगर सलाह लेने की बारी आए तो पहले
परिवार को तवज्जो दें,
बाद में रिश्तेदारों और दोस्तों को।

”

115



‘छोटी-छोटी बातें’

“

सलाह दें, थोपें नहीं।
मानसिक रूप से तैयार भी रहें कि हो सकता है
आपकी सलाह नहीं मानी जाए।

हँसकर कही गई कड़वी बात भी
मीठी लगने लगती है।

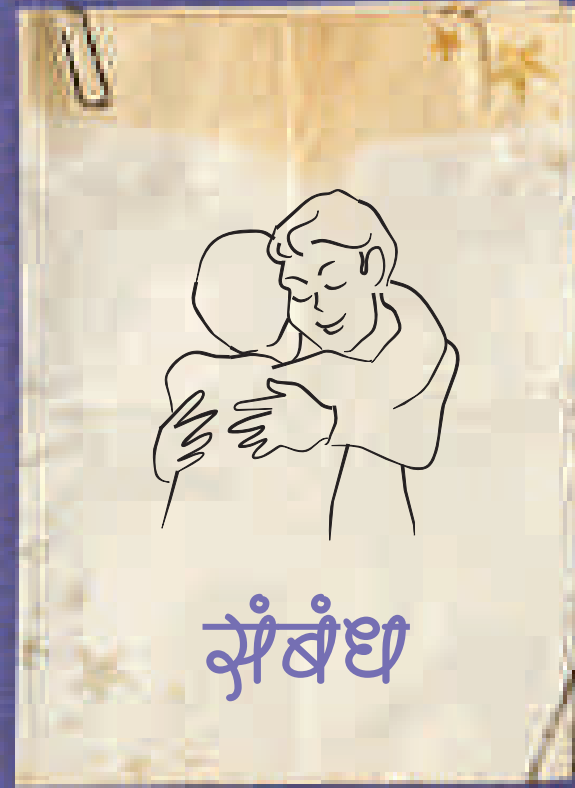
भले ही आपने नया मकान बनाया हो
पर पूरा मकान उन्हें ही दिखाने ले जाएँ,
जो उसे देखने को उत्सुकता बताए।
पारिवारिक फ़ोटो एलबम को
दिखाने पर भी
इसी बात का ख्याल रखें।

”

116



‘छोटी-छोटी बातें’



117

‘मैं ही हूँ’
की जगह
‘मैं भी हूँ’
को अपने जीवन की
विचारधारा बनाएँ।



118



119

“

अगर आपको कहीं और से
पता चलता है कि आपका नज़दीकी व्यक्ति
किसी ऐसी विपत्ति में है
जिसे संकोचवश वह आपको बता नहीं पा रहा।
उसके आवाज़ देने का इंतज़ार करने के बजाए
आगे होकर उससे मिलें और
उसे विश्वास दिलाएँ
कि आप उसके साथ हैं।

आप अपना समय उनके साथ बिताना चाहते हैं,
जिन्हें आप चाहते हैं,
पर उनके लिए भी समय बचाइये
जो आपको चाहते हैं।

”

120



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जब भी किसी से हाथ मिलाएँ,
गर्मजोशी से मिलाएँ।
आपके हाथ मिलाने के ढंग से
आपका आत्मविश्वास परिलक्षित होता है।
आपका जोश, आपके चेहरे से भी
झलकना चाहिए। इस गर्मजोशी से ही सामने
वाले को लगता है कि आप उसमें रूचि ले रहे हैं।

अपने कर्मचारियों के साथ वैसा ही बर्ताव करिये
जैसा आप अपने ग्राहकों से करते हैं।
उन्हें कभी भी यह कहने का अवसर न खोएँ
कि वह आपके संस्थान के लिए
क्या अहमियत रखते हैं।

”

121



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी व्यक्ति के चरित्र का आकलन
उसके अभाव के दिनों में नहीं
उसके वैभव के दिनों में करें।

●

किसी से दुश्मनी को इतना गहरा भी
न करते चलें कि भविष्य में
चाहकर भी समझौता न कर पाएँ।

●

किसी तीसरे व्यक्ति की
क्या ताक़त है कि दो व्यक्तियों के बीच
ग़लतफ़हमी पैदा करे।
दो के बीच की ग़लतफ़हमी ही
तीसरे व्यक्ति को बीच में लाती है।

”

122



‘छोटी-छोटी बातें’

“

वे नज़दीकी लोग जो किन्हीं विशेष कामों के
लिए आप पर ही निर्भर रहते हों
उनके काम आते रहना चाहिए।
आपके मना करने पर वे अपना काम
कहीं से करवा ही लेंगे पर
आपकी अहमियत कम हो जाएगी।
उनका यह भ्रम टूट चुका होगा कि उनका काम
आपके बग़ैर नहीं चल सकता था।

●

किसी व्यक्ति को जीवन में आपके लिए
जगह बनाने को मत कहिये।
जो लोग आपकी अहमियत समझेंगे,
वह खुद-ब-खुद जगह बना देंगे।

”

123



‘छोटी-छोटी बातें’

“

मज़ाक़, मज़ाक़ ही रहे,
कहीं भी वह किसी की
खिल्ली नहीं बनना चाहिए।

●
किसी की सफ़ाई न दें,
क्योंकि दोस्तो को उसकी ज़रूरत नहीं होती
और दुश्मन उस पर विश्वास नहीं करते।

●
किसी से असहमत होने पर
सौहार्दपूर्ण लड़ाई लड़ें।
आपका मतभेद विषय से है,
व्यक्ति से नहीं।
मतभेद को मनभेद में न बदलें।

”

124



‘छोटी-छोटी बातें’

“

परिवार में आप किसी रिश्तेदार को
या उसकी कार्यशैली को पसंद नहीं करते हैं
तो इस नापसंद को इतना न बढ़ाएँ
कि जिससे रिश्ता ही टूट जाए।

●
चाहे माहौल कटु भी हो पर
काम छोड़कर जाने वाले कर्मचारियों को
उसकी बेहतर सेवाओं का स्मरण करते हुए
गरिमामय विदाई दें।

●
यह कहने से बचें कि आपने ऐसा कहा...!
हमेशा यह कहें... ‘मैं ऐसा समझा !
बहुत सारे विवाद स्वतः ही समाप्त हो जाएँगे।’

”

125



‘छोटी-छोटी बातें’

“

दोस्तो या परिजनों को पैसा उधार देते समय
इस बात की मानसिक तैयारी भी रखें कि
शायद धन वापस नहीं आएगा।
यह भी मन में उसी समय निश्चय कर लें कि
अगर यह वापस नहीं आया तो भी
यह धन आपसी संबंधों को
खराब करने का कारण नहीं बनेगा।
मन इतना पक्का हो तो ही अपनों को उधार दें।



सोशल क्लबों की सदस्यता ग्रहण कीजिए,
लेकिन वहाँ के विवादों में पड़ने से
स्वयं को बचाएँ। ध्यान रहे, हम संबंधों को प्रगाढ़
करने के लिए वहाँ एकत्र हुए हैं।

”

126



‘छोटी-छोटी बातें’

“

संबंधों को जोड़ने वाले
नये साधनों जैसे
फ़ेसबुक, ब्लॉग, व्हाट्स एप
आदि से स्वयं को भी जोड़ें...
पर ध्यान रहे,
इसे शौक बनाएँ, आदत नहीं।



संबंधों को निखारने के लिए
आपके दिल-दिमाग में
जो कुछ भी चल रहा है,
सलीक़े के साथ आपस में बाँटिये।
बातचीत करने से
रिश्ते में मज़बूती आती है।

”

127



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर आपकी याददाश्त कमज़ोर हो तो
फ़ोन पर किसी को
'मैं आपको फ़ोन लगा लूँगा'
कहने की बजाय यह कहें कि
'मुझे फ़ोन लगा लीजिएगा'।

आपको पता होना चाहिए कि आप किन
लोगों के साथ खड़े हैं... ग़लत लोगों के साथ
खड़े रहना भी आपको ग़लत साबित कर देगा।

अपनों के साथ कभी भी
ऐसी लड़ाई मत करो कि लड़ाई तो जीत जाओ
पर अपनों को हार जाओ।

”

128



‘छोटी-छोटी बातें’

“

दो-चार मुलाकातों में ही
किसी अजनबी के प्रति
अनुकूल या प्रतिकूल धारणा न बनाएँ।
पक्का नज़रिया
कुछ समय बीतने पर ही बनाएँ।

अपने कुटुंब, रिश्तेदार, जाति
और समाज के लोगों से
हमेशा मधुर संबंध रखें।

बैंक सर्वोत्तम मित्र है।
अपने बैंकर्स से अनुशासित एवं
मधुर संबंध रखें।

”

129



‘छोटी-छोटी बातें’

“

चाहे कितने ही मधुर संबंध हों,
 आपस में बड़ा व्यवहार करते समय
 रेट अवश्य तय कर लेवें।
 किसी भी अनुबंध के समय
 तय की हुई शर्तों को कागज़ पर
 लिखकर द्वितीय पक्ष के हस्ताक्षर करवा लेवें।
 विवाद के समय काम आते हैं।

जीवन में वे सुखी नहीं हैं,
 जिन्हें श्रेष्ठ जीवन साथी मिला
 बल्कि सुखी वे हैं
 जिन्होंने अपने जीवन साथी को
 श्रेष्ठ बना लिया।

”

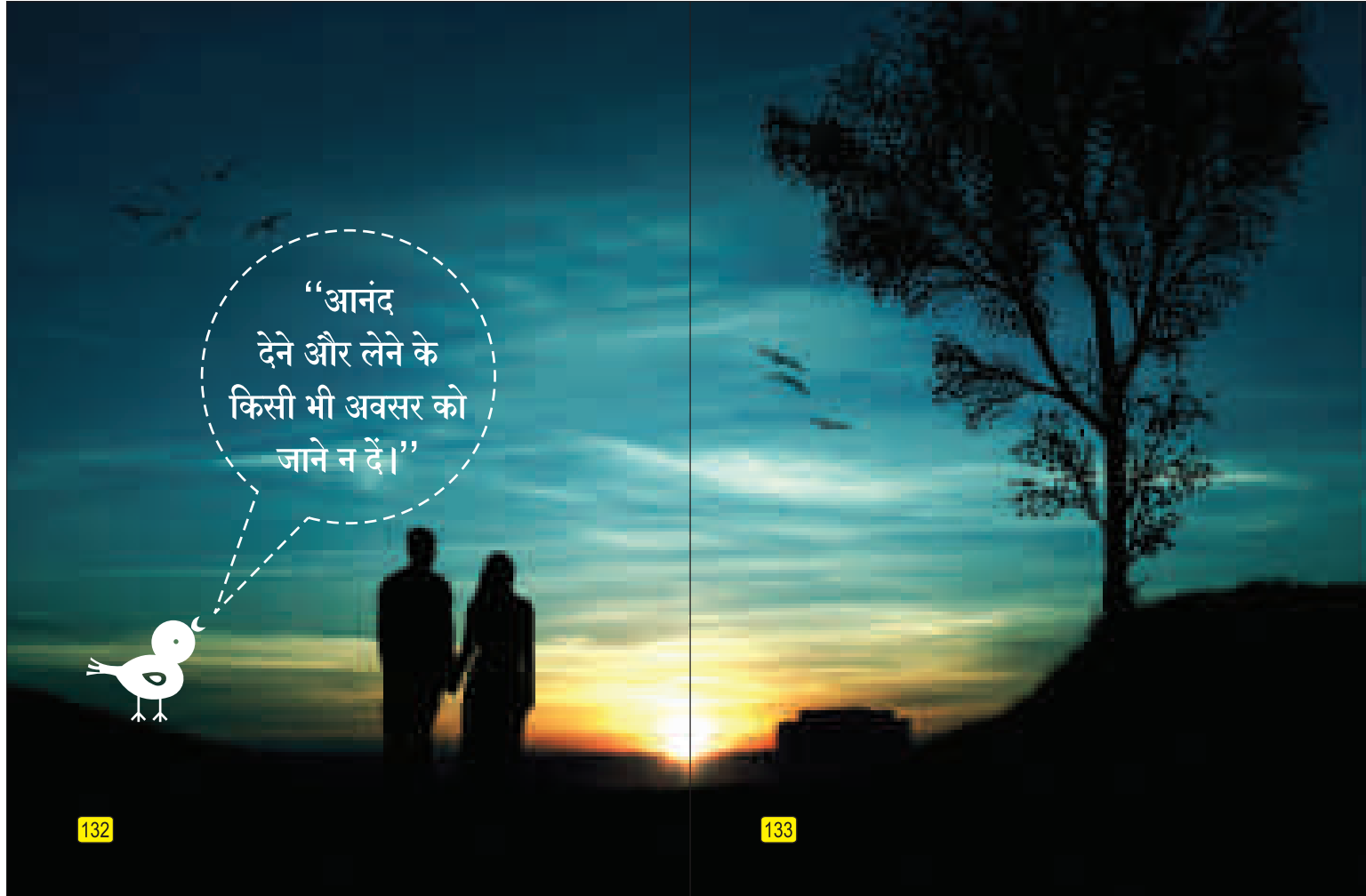
130



‘छोटी-छोटी बातें’



131



“आनंद
देने और लेने के
किसी भी अवसर को
जाने न दें।”

“

प्रियजनों को
छोटे-छोटे उपहार देते रहिए।
उन हाथों में हमेशा खुशबू रहती है
जो औरों को गुलाब बाँटते हैं।

●
प्रार्थना कीजिए,
इसमें अनगिनत शक्ति है।

●
अगर कोई ऐसा चुटकुला
सुनाया जा रहा हो
जो आपका सुना हुआ हो
फिर भी बिना टोके
उसे पूरा सुनिये।

”

134



‘छोटी-छोटी बातें’

“

इस बात का ध्यान रहे कि
एक बड़ी खुशी के चक्कर में
कहीं हम छोटी-छोटी खुशियों को
अनदेखा तो नहीं कर रहे हैं।

●
अपने बच्चों और परिवार के बुजुर्गों के साथ
जितना भी समय बिताया जाए, कम है...
कल क्या पता, इन्हीं के लिए आँखें तरस जाएँ...

●
अपने करीबी व्यक्तियों का
जन्मदिन एवं विवाह की वर्षगाँठ
याद अवश्य रखिए। यह दिन उनके जीवन का
एक महत्वपूर्ण दिन है।

”

135



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आपको पसंद न भी हो पर
कभी-कभार नयी फ़िल्में अवश्य देखते रहें,
ये आपको समय और समाज में
हो रहे बदलाव से अवगत कराती रहेंगी।
नये संगीत से भी स्वयं को जोड़ कर रखें।

परिवार के साथ छोटी-छोटी पिकनिक
मनाते रहें। अपने ऑफ़िस स्टाफ़ के साथ
मौक़ा निकालकर पिकनिक
ज़रूर प्लॉन करना चाहिए।

जीवन में कम से कम एक वाद्ययंत्र बजाना
अवश्य सीखें। हो सके तो नृत्य भी सीखिए।”

136



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी प्रोफ़ेशनल फ़ोटोग्राफ़र से
समय लेकर फ़ोटोग्राफ़ी के गुरु सीखिए।
फ़ोटोग्राफ़ी से
आपको विचार दृष्टि मिलती है।

आदत डालिये -
सोने से पूर्व कुछ प्रेरणादायक पढ़ सकें।

संभव हो सके तो कहीं बाहर जाते समय
कैमरा अवश्य साथ रखें।
अवसर कभी भी उपस्थित हो सकता है।”

137



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर आप अपने परिवार से दूर रहते हैं
और छुट्टियाँ बिताने के लिए
घर जाने या पर्यटन स्थल दोनों में से
किसी एक को चुनने का विकल्प हो तो
घर को प्राथमिकता दें।

●
दिन में कभी कुछ समय
एकांत में रहें या मौन रहें।

●
अगर संभव हो सके तो अपने कार्यस्थल पर
गीत-संगीत की धीमी स्वर लहरी बजने दें,
यह आपको थकान व मानसिक तनाव से
काफ़ी हद तक मुक्त रखने में सहायक रहेगी।”

138



‘छोटी-छोटी बातें’

“

समय चुराकर अपनी पसंद की
फ़िल्मों को कभी कभार देखते रहें।
अपनी पसंद के गानों को रेकॉर्ड करवाकर
तैयार रखें, समय मिलने पर सुनते रहें।
इनसे आपको ताज़गी और
स्फूर्ति मिलती रहेगी।

●
समाचार पत्र, पत्रिकाओं में
चुटकुलों वाला कॉलम
अवश्य पढ़ते रहिए,
यह आपके तनाव को कम करने में
मदद करते हैं। वर्ग पहली भरने से
आपका शब्द ज्ञान बढ़ेगा।”

139



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अच्छी पुस्तकें हर क्रीमत में सस्ती हैं,
खरीदते रहें, चाहे छोटी ही सही पर घर में
अपनी एक लायब्रेरी बनाएँ।

भागमभाग और आपाधापी के इस दौर में भी
अपनी हॉबी बचाकर रखिए,
ये जीवन के उत्तरार्ध में
आपको ऑक्सीजन देगी।

स्कूली बच्चों को लिफ्ट देने का मौक़ा न चूकें।
स्कूल बस में जाते हुए
बच्चों को देखकर हाथ हिलाएँ,
उनका उत्साह बढ़ाएँ।

”

140



‘छोटी-छोटी बातें’

“

फ़ोटो एलबमों को
अलमारियों में बंद करने की बजाए
ऐसी जगह रखें,
जहाँ से फ़ुर्सत के क्षणों में
आप उन्हें पलटाकर ताज़गी ले सकें।
अगर संभव हो सके तो घर, प्रतिष्ठान में
एक सॉफ़्ट बोर्ड लगाएँ
जिसमें जीवन के यादगार क्षणों की
तस्वीर लगाते रहें, बदलते रहें।
ये माहौल को खुशनुमा रखने में
सहायक रहेंगी।
इसी तरह एक बोर्ड
प्रेरक विचारों का भी लगाएँ।

”

141



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी कार्यक्रम में
अगर आपके यहाँ काफ़ी अधिक गुलदस्ते
इकट्ठे हो गए हों तो कुछ अपने
बेहद नज़दीकी के यहाँ बाँट दें...
कोने में पड़े-पड़े फूल मुरझाएँ
इससे बेहतर है
किसी और घर में शोभा बढ़ाएँ।

कोई भी चीज़ आपको
तभी दिलचस्प लगेगी
जब कि आप उसमें दिलचस्पी लेंगे।
अपने समाज, दोस्त, काम, परिवार, शहर
जैसे भी हैं उनमें दिलचस्पी लेते रहिये।

”

142



‘छोटी-छोटी बातें’

“

राखी, होली, बरसात,
ऐसे प्रसंगों पर उनके गीतों की
सी.डी. तैयार रखें।
अवसरों का आनंद
कई गुना बढ़ जाता है।

अगर आप कोई ऐसा
क्रिस्सा या चुटकुला
सुनना चाहते हैं कि
जिसके प्रति आपके मन में
यह शंका है कि श्रोता शायद
पहले सुन चुके हैं
तो पूरा सुनाने से पहले पूछ लें।

”

143



‘छोटी-छोटी बातें’

“

तस्वीरों के पीछे
पेंसिल से स्थान, दिनांक एवं
फ़ोटो के साथ में
खड़े लोगों के नाम
लिख लेना चाहिए।
वक़्त बीतने पर स्मृति लोप होती है
और कुछ चित्र दुर्लभ हो जाते हैं।



उम्र के बढ़ते-बढ़ते
भले ही आपका चाव कम हो गया हो,
पर बच्चों की खुशी के लिए
त्यौहारों को गर्मजोशी से मनाएँ।

”

144



‘छोटी-छोटी बातें’

“

सामाजिक एवं
स्वयंसेवी संस्थाओं को
यथासंभव मदद करें।
मदद से भी ज़्यादा ज़रूरी है
उसमें निःस्वार्थ सेवा
प्रदान कर रहे
लोगों का उत्साहवर्धन।



आए हुए अच्छे पत्रों को
संभालकर रखें।
एक दिन ये जीवन के
अनमोल दस्तावेज़ बन जाते हैं।

”

145



‘छोटी-छोटी बातें’

“

नाट्यगृह या थियेटर में
अच्छी सीट के लिए
कुछ ज़्यादा भी खर्च
करना पड़े तो कीजिए।
किसी भी समारोह में
जहाँ तक संभव हो समय पर पहुँचें।



वे खुश नहीं हैं,
जो खुशियों के पीछे भागते हैं...
खुश तो वे हैं,
जो लोगों में
खुशियाँ बाँटते हैं....

”

146



‘छोटी-छोटी बातें’

“

यादें धुँधला जाती हैं, तस्वीरें नहीं।
यादगार पलों की तस्वीरों को
खज़ाने की तरह संभालकर रखें,
ग्रुप फ़ोटो को प्रिन्ट करवाते समय
उसकी एक से अधिक कॉपी प्रिन्ट करवाएँ
एवं उन्हें भी प्रेषित करें,
जो उसमें शामिल हो।



लोगों की लाभ, हानि,
बदनामी की बातों में रूचि न लें।
लोग ऐसी बातें करके
आपका मंतव्य जानना चाहते हैं।

”

147



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी ने आमंत्रण पत्र में
सिर्फ आशीर्वाद की अपेक्षा की है
तो उनके आग्रह का सम्मान करें।
आपका ज़िद करके उपहार देना
उन लोगों के लिए शर्मिन्दगी का
कारण बनता है जो उपहार नहीं लाए हैं।
आप अपना उपहार बाद में अलग से
मौक़ा निकालकर दे सकते हैं।

”

148



‘छोटी-छोटी बातें’



149

“सूर्योदय या सूर्यास्त
देखने का
अवसर मिले
तो न चूकें।”



150

151

“

किसी भी सभा को संबोधित
करने का अवसर मिल रहा हो
तो उसे कभी भी हाथ से न जाने दें।
प्रयास करें कि संबोधन संक्षेप में खत्म हो।
अगर आपको पहले से ही भान हो कि
आपको बोलना पड़ सकता है
तो घर से ही तैयारी कर के जाएँ।



कभी-कभी ऐसा भी कोई कार्य हाथ में लें,
जिसे कोई भी करना नहीं चाह रहा हो।
अनेकों बार उनमें बहुत बड़े
अवसर छिपे रहते हैं।

”

152



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अवसरों का लाभ तुरंत उठाएँ।
यह न तो किसी का इंतज़ार करता है
और न ही दोबारा आता है।
जब भी हम कहते हैं कि
मैं यह कार्य नहीं कर सकता,
उसी क्षण दूसरों के लिए
एक सुनहरा अवसर
उपस्थित कर देते हैं।



अवसर चाय में डुबोये
बिस्किट के समान होते हैं...
ज़रा सी देर की, और निकला हाथ से।

”

153



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन में
कोई भी उचित अवसर
हाथ से न जाने दें।

●
समय रहते अपना पासपोर्ट अवश्य बना लें।
हो सकता है इसके न होने से
कोई अच्छा अवसर
आपके हाथ से निकल जाए।

●
नववर्ष पर हमेशा कुछ नव-संकल्प लें।
अपने संकल्प अपने परिजनों
को ज़रूर बताएँ
ताकि वो आपको याद दिलाते रहें।

”

154



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आपके दिमाग में अगर
बेहतरीन आइडिया आया हो
तो उसे तुरंत लागू कर दें।
अगर आपने उसे किसी मीटिंग में रखा
तो वह धराशायी हो जाएगा।

●
हमें सफलता अवश्य मिलेगी,
बशर्ते हम इसकी चिंता करना छोड़ दें
कि इसका यश किसे मिलेगा,
या मिलेगा भी कि नहीं।

●
जीवन में सफलता के लिए
‘तुरंत’ से बड़ा कोई मंत्र नहीं है।

”

155



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आप जो भी करना चाहते हैं,
अपने लक्ष्य को
हमेशा याद रखें।
अगर आप
बाज़ के साथ आकाश में उड़ना चाहते हैं
तो बतखों के साथ तैरने में
अपना समय
बर्बाद न करें।

ईश्वर जब अवसर भेजता है
तो वह सोये हुए लोगों को
नहीं जगाता है।

”

156



‘छोटी-छोटी बातें’

“

भले ही आप बहादुर न हों
पर होने की
कोशिश ज़रूर करें,
क्योंकि इन दोनों के बीच का अंतर
कोई नहीं बता सकता।

जब हम न कहते हैं
तो एक सुंदर शुरूआत का
अंत हो जाता है
पर जब हम हाँ कहते हैं
तो एक सुंदर अंत की
शुरूआत हो जाती है।

”

157



‘छोटी-छोटी बातें’

“

विफलता तो तय है...
 अगर हम
 सिर्फ सोचते ही रह गए
 या फिर हमने
 बिना सोचे
 कुछ कर लिया।

●
 अच्छे व्याख्यान,
 ट्रेनिंग वर्कशॉप के
 किसी भी मौके को
 हाथ से न जाने दें।
 जितना ज़्यादा जानेंगे,
 उतना कम डरेंगे।

”

158



‘छोटी-छोटी बातें’



159

“उम्र/ओहदे में
कोई छोटा हो या बड़ा;
अभिवादन की
पहल आप करें।”

160

161

“

समारोह में अतिथियों का
पुष्पहार या बुके से
स्वागत करने की जगह
उन्हें पौधा/पुस्तक भेंट
कर अभिनंदन करें...
इससे एक बेहतर संदेश जाएगा।

●

किसी भी मेहमान के
आगमन पर उसका
पूरी गर्मजोशी से स्वागत करें।
शुरूआत के कुछ मिनट
बेहद महत्वपूर्ण होते हैं।

”

162



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी के यहाँ मिलने जाएँ
और संभव हो तो उसके लिए
एक छोटा सा उपहार
अवश्य लेकर जाएँ।

●

उपहार में किसी को भी
बुके (गुलदस्ता) की जगह
बुक (पुस्तक) भेंट करें,
उसकी महक
लंबे समय तक बनी रहेगी।
हो सके तो उस पर
एक पंक्ति ज़रूर लिखें।

”

163



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जब आप किसी रेस्तराँ में
किसी के मेहमान हों और
मेज़बान आपसे ऑर्डर देने के लिए कहे
तो महँगी चीज़ों का
ऑर्डर करने से परहेज़ करें।

●
अपने बच्चों से घर आए मेहमानों को
ज़बरदस्ती कविताएँ व गाने सुनवाने से बचें।

●
मेहमानों के सामने अपने बच्चों,
पालतू प्राणियों, रिश्तेदारों की तारीफ़ों से भी
परहेज़ करें। अपने बच्चों को दूसरों के
माँगने पर ही गोदी में दें।

”

164



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी के आतिथ्य सत्कार ने
आपके दिल को छुआ हो
तो प्रतिभावना में फ़ोन, एस.एम.एस. या
पत्र द्वारा उनका शुक्रिया अवश्य अदा करें।

●
अपने कर्मचारियों का
जन्मदिन एवं विवाह वर्षगाँठ अवश्य मनाएँ।

●
सम्मानित व्यक्ति आपके दफ़्तर में आए
तो कुर्सी से खड़े होकर उनका अभिवादन करें।
उन्हें अपने हाथ से चाय का
प्याला उठाकर दें एवं
उन्हें उनकी गाड़ी तक छोड़ने जाएँ।

”

165



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी को घर ले जाकर
पिलाई गई चाय की एक प्याली
होटल में दी गई
भव्य पार्टी पर भारी होती है।

आतिथ्य सत्कार में
उन मेहमानों का विशेष ध्यान रखें
जिनका स्तर आपकी तुलना में
बेहद कमज़ोर है,
आपका ज़रा सा दंभ
उनके दिल दुखने का
कारण बन सकता है।

”

166



‘छोटी-छोटी बातें’



167

“जीत से पहले
जीतने का दावा
कभी मत करिये।”



168



169

“

यह सब जानते हैं
कब क्या कहना है;
कुछ ही जानते हैं
कब क्या नहीं कहना।

●
अगर आपको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि
जिससे आप मिल रहे हैं
वह शायद आपको भूल गए होंगे
तो आगे होकर
उन्हें अपना परिचय दें।
उनसे यह नहीं पूछें कि
आप मुझे पहचानते हैं क्या ?
उन्हें शर्मिन्दगी होगी।

”

170



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी को भी कभी भी
यह ना कहें कि
आप बहुत मोटे हो गये हो,
काले हो गये हो,
या आपके बाल सफ़ेद हो गये हैं।

●
आइना
सभी के घरों में है।

●
कोई अगर किसी वजह से
शर्मिन्दा हो और
सबसे आँखें चुरा रहा हो
तो कम से कम
उसे घूर के देखने से बचें।

”

171



‘छोटी-छोटी बातें’

“

आपके अंतरंग संबंध वाला व्यक्ति
अगर अब बड़ा आदमी बन गया हो तो
सार्वजनिक रूप से
उससे व्यवहार में उसकी मर्यादा का
अवश्य खयाल रखें।

अगर कोई आप-बीती सुना रहा हो तो
उसके बीच में अपनी बात न फ़साएँ।

कोई भी समस्या
बॉस के पास तभी लेकर जाएँ,
जब आपके पास भी उसके संभावित
समाधान का एक विकल्प तो अवश्य हो।

”

172



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अगर धीमे बोलने से काम चल रहा है
तो ज़ोर से बोलने से बचें।
छोटी-छोटी सी बातों पर शिकायतें करने से बचें।
ज़्यादा मीन-मेख निकालने वाले की छवि
असंतुष्ट व्यक्ति के रूप में बन जाती है।

मित्र अगर अपने परिवार के साथ है
तो खयाल रखें कि हास-परिहास और
बातें कहीं मर्यादा तो पार नहीं कर रही।

अगर तरक्की करना है
तो यह तय है कि आपको कुछ
अलोकप्रिय निर्णय भी लेने पड़ेंगे।

”

173



‘छोटी-छोटी बातें’

“

कभी भी आगे बढ़कर
अपने प्रतियोगी से कटुता मोल न लें।
उनके सुख में न सही
दुःख में ज़रूर सहभागी बनें।

जो लोग आपको पसंद नहीं करते,
उनसे बहस करने की ज़रूरत नहीं है,
समय की बर्बादी ही होगी।
इतना समय उनके साथ बिताएँ
जो आपको समझते हैं।

कौन सही है, इससे ज़्यादा इस बात का
ध्यान रखें कि क्या सही है।

”

174



‘छोटी-छोटी बातें’

“

बहस में अगर आपके
शब्द कठोर और आवाज़ तेज़
होती जा रही है
तो उसका मतलब यह है कि
आपके तर्क कमज़ोर हैं।

पुस्तक या फ़िल्म का अंत
कभी किसी को मत बताइये।

जो काम आपसे हो ही नहीं पाएगा
तो उसके लिए
कल की जगह
आज ही ना बोलना सीखें।

”

175



‘छोटी-छोटी बातें’

“

क्रोध उन्हीं पर करें
जो उसे सही
परिप्रेक्ष्य में ले
और समझे कि
आपका
दिल साफ़ है।

जिसकी डिक्शनरी में
शब्दों का
अभाव होता है
वह क्रोध के दौरान
गालियों का
उपयोग करता है।

”

176



‘छोटी-छोटी बातें’



177

“अगर किसी को उसकी कमियों के बारे में बताना हो तो बात की शुरुआत खूबियों से करें, उसके बाद कमी बताएँ।”



178



179

“

अच्छी सर्विस के लिए बैरे,
टैक्सी ड्रायवर और
अन्य कर्मचारियों को
टिप के साथ
शाबाशी भी दिया करें।

●
प्रशंसा सभी को प्रिय है,
हर मुमकिन कोशिश से
उन्हें यह दीजिएगा,
पर तारीफ़ चापलूसी में
न बदल जाए,
इस बात का
अवश्य खयाल रखें।

”

180



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपने पुराने दोस्तो को
अचानक फ़ोन करके
सरप्राइज़ देते रहें।

●
अगर आपके किसी परिचित ने
कोई उपलब्धि अर्जित की है,
तो अन्य परिचितों को
आप उसकी सूचना दें।

●
किसी की भी प्रशंसा
सबके बीच करें
पर उसकी कमज़ोरी
अकेले में जताएँ।

”

181



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अच्छी तरह तैयार होकर आने वाला
नज़दीकी व्यक्ति
हमसे यह उम्मीद करता है कि
हम उससे कहें...
आप बेहद सुन्दर लग रहे हैं।
इसी तरह अच्छा भोजन बनाने वाला भी
आपसे मान्यता की उम्मीद करता है।

जब भी आपका कोई कर्मचारी
अपने परिवार या रिश्तेदारों के साथ
आपसे आकर मिले तो उनके सामने अपने
कर्मचारी की प्रशंसा कीजिए और उन्हें
अतिरिक्त सम्मान दीजिये।

”

182



‘छोटी-छोटी बातें’

“

जो कपड़े,
चश्मे आपके पहनने के
उपयोग में
नहीं आ रहे हों
उन्हें ज़रूरतमंदों में
बाँट देना चाहिए।

बच्चों की विशेष
उपलब्धियों की तस्वीरें
और पेपर कटिंग्स
सहेजते रहिये।
सालों बाद ये सुखद
अनुभूति देते हैं।

”

183



‘छोटी-छोटी बातें’

“

यदि किसी परिचित की
उपलब्धि या प्रशंसा का कोई
समाचार
आपने पढ़ा हो तो उसे
बधाई अवश्य दीजिये।

”

184



‘छोटी-छोटी बातें’



संचार

185



186

187

“किसी को भी
किया गया एस.एम.एस.
लिखित दस्तावेज़ है।
सौ बार जाँचें
तब एक बार भेजें।”

“

अपने मोबाइल फ़ोन बुक का
रेकॉर्ड कम्प्यूटर अथवा डायरी में
अवश्य अपडेट करते रहें।
गुम हो जाने पर फ़ोन तो
खरीदा जा सकता है पर
उसमें सुरक्षित फ़ोन नम्बरों
की सूची नहीं।

●
इमरजेंसी में
काम आने वाले सारे नंबरों को
अपने मोबाइल में एक साथ सेव कर रखें
एवं परिवार में उसकी
जानकारी भी देकर रखें।

”

188



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अपने मोबाइल की फ़ोन बुक में
चाहे कभी-कभार ज़रूरत वाले भी हों,
पर नंबर ज़रूर सेव करते चलना चाहिए।
जीवन में क्या पता
किस मौक़े पर कौन सा नंबर
कितने बड़े काम आ जाए।

●
अपने मोबाइल में ही
अपना बैंक खाता, बैंक कोड,
पासपोर्ट, पेन, टिन नंबर आदि
सेव करके रख लें।
सुरक्षा की दृष्टि से स्पष्ट शब्दों के बजाय
कोड का उपयोग बेहतर होता है।

”

189



‘छोटी-छोटी बातें’

“

मोबाइल नंबर सेव करते समय
अपनी बुद्धि के अनुसार
संकेत भाषा ज़रूर लिखें।
बाद में याद नहीं रहता
इनका नंबर सेव किया था
जैसे रामसिंह (इलेक्ट्रिशियन)।

●
किसी एस.एम.एस. को
फ़ारवर्ड करने के पूर्व
अवश्य सोचें कि
आपके और प्राप्तकर्ता
के संबंध कैसे हैं;
क्या वह उसे पढ़कर प्रसन्न होगा।

”

190



‘छोटी-छोटी बातें’

“

अंतिम यात्रा एवं
शोक सभा में मोबाइल बंद रखें।
(आपके साथ कोई मित्र भी उसमें शरीक
हो रहा हो तो उसे भी सतर्क करें)।

●
फ़ोन उठाते समय मुस्कुराएँ,
कॉल करने वाले को
आपकी मुस्कुराहट की आवाज़ सुनाई देती है।
अगर कोई कॉल आपको
नींद से जगा देता है तो खीजने की बजाए
पहले उसकी बात ध्यान से सुनें,
शायद हो सकता है उसका कॉल
आपकी नींद से ज़्यादा ज़रूरी हो।

”

191



‘छोटी-छोटी बातें’

“

किसी भी आयोजन, बैठक वार्ताओं में
अपने मोबाइल की घंटी को
व्यवधान न बनने दें।
अगर आपके मोबाइल पर लंबी और
ज़रूरी बातें चल रहीं हों
और कोई आपसे मिलने आ जाए
तो कुछ क्षणों के लिए बात रोककर
उनसे अनुमति ले लें।

समय के साथ चलिये-नवीनतम तकनीक
से जुड़िये। उसका उपयोग करना सीखिये।
मोबाइल आज के दौर का
श्रेष्ठ निजी सचिव है।

”

192



‘छोटी-छोटी बातें’

“

बार-बार अनावश्यक
एस.एम.एस. करने से आपकी छवि
फुर्सती व्यक्ति की बन जाती है।

अगर किसी को एक-दो बार
रिंग कर देने पर नो रिप्लाय आ रहा है
तो अगली बार कुछ देर बाद
डायल करें या उनके
वापसी फ़ोन का इंतज़ार करें।

अगर आप किसी कारण से मोबाइल नहीं
उठा पा रहे हैं तो लगाने वाले को एस.एम.एस.
कर अपने प्रतिउत्तर से सूचित कीजिएगा।

”

193



‘छोटी-छोटी बातें’

“

मोबाइल की रिंग टोन और
डायलर टोन
आपके व्यक्तित्व का
आइना होती हैं...
सुरुचिपूर्ण रखें।”

”



